

सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2025 का पंचम-षष्ठ अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक महिला विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् प्रो. वैद्य बनवारीलाल गौड एवं डॉ. विश्वावसु गौड द्वारा लिखित 'चित्तवृत्तिनिरोधक योग से वेदनाओं का अवर्तन सम्भव' नामक लेख में चित्तवृत्तिनिरोधक योग की अवधारणा को चरक संहिता और भगवद्गीता के माध्यम से समझाया है। तत्पश्चात् डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा लिखित 'प्राचीनकाल से वर्तमान तक लिपि' लेख में लिपि के इतिहास को प्राचीन संस्कृत ग्रंथों के माध्यम से स्पष्ट किया है। तत्पश्चात् देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित 'वैज्ञानिक संस्कृत वाङ्मय' नामक लेख में संस्कृत वाङ्मय को वैज्ञानिक रूप से स्पष्ट किया है। तत्पश्चात् डॉ. अजीत तिवारी द्वारा लिखित 'वेदों में दीर्घ जीवन एवं बल वृद्धि के उदाहरण' नामक लेख में वेदों में दिये हुये दीर्घायु के उपाय एवं साधन तथा बलवृद्धि के उदाहरणों का वर्णन किया है। डा. रेशु तिवारी द्वारा लिखित आदिवैदिककाल व वैदिककाल में सृष्टि रचना लेख में वेदों के माध्यम से सृष्टि रचना को स्पष्ट किया है। डॉ. मनीषा शर्मा द्वारा लिखित काव्यशास्त्रे रसपदस्थानेकार्थत्वम् लेख में काव्यशास्त्र में रस के महत्व को स्पष्ट किया है। तत्पश्चात् जयप्रकाश शर्मा द्वारा लिखित राजगुरु रत्नाकर पौण्डरीक (महाशब्दे) लेख में महाराज सवाई जयसिंह द्वितीय के राजगुरु रत्नाकर पौण्डरीक जी जीवन परिचय दिया है। मोहित बिस्सा द्वारा लिखित निर्जला एकादशी का महत्व लेख में २४ एकादशियों में निर्जला एकादशी को श्रेष्ठ बताते हुये इसके महत्व को स्पष्ट किया है। अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा